सम्पर्क ❖ सहयोग ❖ संस्कार ❖ सेवा ❖ समर्पण

राष्ट्र समर्पित

डॉ. सूरज प्रकाश

2013
स्वामी विवेकानन्द
उत्तर शताब्दी 150 वर्ष
स्वर्ण जयंती 50 वर्ष

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

उत्तिष्ठत जाग्रत ❖ Uttishthat Jagrat

भारत विकास परिषद
विवेकानन्द मेडिकल मिशन
EYE&EAR FREE CAMP

राष्ट्र समर्पित

डॉ. सूरज प्रकाश

2013

उत्तर शताब्दी 150 वर्ष

स्वर्ण जयंती 50 वर्ष

भारत विकास परिषद् प्रकाशन

उत्तिष्ठत जाग्रत ❖ Uttishthat Jagrat

राष्ट्र समर्पित डॉ. सूरज प्रकाश

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : **भारत विकास परिषद प्रकाशन**
भारत विकास भवन
(पावर हाउस के पीछे)
पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन : 011–27313051, 27316049
फैक्स : 011–27314515
e-mail : bvp@bvpindia.com
website : www.bvpindia.com

मुद्रक : **प्रीतिका प्रिंटर्स**
नारायणा, दिल्ली
फोन : 9717225609

सहयोग राशि : 10.00 रुपए

दो शब्द

नेता का सबसे बड़ा गुण यह है कि वह स्वप्नदर्शी होता है एवं अपने उन स्वप्नों को हकीकत में बदल देने की क्षमता तथा दृढ़ निश्चय रखता है। वह आत्मविश्वास से परिपूर्ण होता है एवं कोई भी विपरीत परिस्थिति उसको अपने लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकतीं। वह अपने सहयोगियों पर विश्वास करता है एवं उन्हें साथ लेकर चलता है। वह अपना मन्तव्य स्पष्ट रूप से समझा सकता है एवं उसके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण होता है जो औरों को उससे बांधता है।

भारत विकास परिषद् के संस्थापक डॉ. सूरज प्रकाश जी इन समस्त कसौटियों पर खरे उतरते हैं। वे एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे एवं हाई स्कूल, इन्टरमाडियेट एवं एम.बी.बी.एस. परीक्षा में भी उन्होंने शीर्ष स्थान प्राप्त किया था। किन्तु वे केवल अपनी विद्यालयी सफलताओं से ही संतुष्ट नहीं थे। समाज सेवा उनके जीवन का सबसे बड़ा मिशन था जिसकी पूर्ति में वे अंतिम क्षणों तक लगे रहे। भारत विभाजन के समय लाहौर तथा जम्मू में विस्थापितों की सहायता उनके इसी मिशन का अंग थी।

समाज के समृद्ध एवं प्रबुद्ध वर्ग को संगठित करके समाज सेवा की ओर उन्मुख करना एवं उन्हें भारतीय जीवन मूल्यों एवं संस्कृति की ओर से जाग्रत करके उसके उत्कर्ष के कार्य में लगाना यही उनके जीवन का विज़न एवं मिशन था। भारत विकास परिषद् की स्थापना इसी स्वप्न को ठोस रूप देने के लिये हुई थी।

डॉक्टर साहब के जीवन की एक और सबसे बड़ी विशेषता थी जो हम सब के लिए अनुकरणीय है। उनके कन्धों पर एक भरे–पूरे परिवार के पालन पोषण का भार था तथा उनकी मेडिकल प्रैक्टिस भी उन्हें अत्यंत व्यस्त रखती थी। वे गृहस्थ जीवन, व्यवसाय एवं समाज सेवा तीनों के ही कर्तव्यों का निर्वाह सफलता पूर्वक, करते थे। वास्तव में उनकी कर्मठता अद्वितीय थी।

यह छोटी सी पुस्तिका हमारे कार्यकर्ताओं का परिषद् के संस्थापक के जीवन वृत्त एवं उनके गुणों से भली प्रकार अवगत करा सकेगी ऐसी मुझे आशा है। पुस्तिका के अन्त में विभिन्न विषयों पर उनके विचार भी दिये गये हैं जो हमारा दिग्दर्शन करते हैं। विभिन्न अवसरों पर लिये गये डॉक्टर साहब के फोटो ने इस पुस्तिका की उपयोगिता और भी बढ़ा दी है।

भारत विकास परिषद् का प्रकाशन विभाग इस सुन्दर पुस्तिका के प्रकाशन के लिये बधाई का पात्र है।

सुरेन्द्र कुमार वधवा
राष्ट्रीय महामंत्री

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पेज नं.
1.	**राष्ट्र समर्पित डॉ. सूरज प्रकाश**	5
	प्रारंभिक जीवन	5
	भारत विभाजन व पुर्नवास कार्य	5
	डॉक्टर साहब दिल्ली में	6
	सिटीजन्स काउन्सिल	7
	भारत विकास परिषद् की स्थापना	7
	कार्य का आरम्भिक स्वरूप	9
	परिषद् का कार्य विस्तार	10
	डॉक्टर साहब की कार्य निष्ठा	11
	चुम्बकीय व्यक्तित्व	11
2.	**डॉक्टर साहब के लेखन से चयनित**	13
	आडम्बर रहित सेवा	13
	महिला सहभागिता	13
	सादा जीवन उच्च विचार	14
	अनुशासन	14
	समयबद्धता का अभाव	15
	सर्वांगीण विकास	16
	भारत विकास परिषद् एक अराजनैतिक संस्था है	16
	भारत विकास परिषद् एंव दूसरे सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन	17
	हमारा एकमात्र उद्देश्य – विकास	19

राष्ट्र समर्पित डॉ. सूरज प्रकाश

प्रारंभिक जीवन

डॉ. सूरज प्रकाश का जन्म पंजाब के गुरुदासपुर जिले के एक गांव छमल में 27 जून 1920 को हुआ था। उनके पिता का नाम राम सरन महाजन एवं माता का नाम श्रीमती मेला देवी था। उनके पिता एक इन्श्योरेन्स कम्पनी में काम करते थे। उनके परिवार में तीन भाई और दो बहिनें थीं जो सब डाक्टर साहब से छोटे थे। महाजन परिवार आर्य समाज का अनुयायी था एवं समस्त परिवार समाज द्वारा आयोजित उत्सवों में अत्यंत उत्साह से भाग लेता था।

नवयुवक सूरज प्रकाश ने प्रारम्भ से ही एक प्रतिभाशाली, मेधावी एवं परिश्रमी छात्र के रूप में ख्याति अर्जित कर ली थी। अपने सहपाठियों के साथ उनका व्यवहार मधुर एवं सहयोग पूर्ण था एवं अपने शिक्षकों के लिये वे एक अनुशासित एवं विनयशील विद्यार्थी थे। वे प्रत्येक कक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करते थे एवं मेट्रीकुलेशन परीक्षा में भी उन्होंने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

इंटरमीडिएट साइंस, जीव विज्ञान की परीक्षा उन्होंने दिल्ली बोर्ड से दी एवं इसमें भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। परिणाम स्वरूप दिल्ली सरकार ने उन्हें किंग एडवर्ड मेडिकल कालेज लाहौर से एम.बी.बी.एस. करने के लिये भेजा एवं साथ ही छात्रवृत्ति भी प्रदान की। सन् 1938 में उन्होंने एम.बी.बी.एस. कोर्स में प्रवेश किया एवं 1943 में प्रथम श्रेणी तथा विशेष योग्यता के साथ इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। इसी वर्ष वे सर गंगाराम हॉस्पिटल लाहौर में हाउस सर्जन के पद पर नियुक्त हो गये। तत्पश्चात् उनकी नियुक्ति सर बालक राम मेडिकल कालेज लाहौर में प्रवक्ता के पद पर हो गई।

भारत विभाजन व पुर्नवास कार्य

मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग पाकिस्तान के लिये आन्दोलन चला रही थी एवं 1946 आते आते यह आन्दोलन हिंसक हो उठा। पंजाब भी इसकी चपेट में आ गया एवं लाहौर तथा उसके आस-पास साम्प्रदायिक दंगे भडक उठे। डा. सूरज प्रकाश के हृदय में सुप्त सेवा की भावना उभर आई एवं उन्होंने दंगा पीड़ितों की सहायता करनी प्रारम्भ कर दी। आततायियों के हाथों से पीड़ितों को बचाने में उन्होंने रात दिन एक कर दिया। तभी 15 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन हो गया एवं

पंजाब के हिन्दू भारत की ओर पलायन करने लगे। डाक्टर साहब इन सबको सुरक्षित रूप से बाहर निकालने उन्हें, रसद पहुंचाने तथा दंगाइयों से उनके सुरक्षा करने के काम में अत्यंत उत्साह से जुट गये। उनकी ख्याति लाहौर में फैलने लगी एवं वे पाकिस्तान सरकार की आँख की किरकिरी बन गये। उनके सर पर इनाम घोषित कर दिया गया। हालात यहाँ तक बिगड़ गये कि प्रात:काल जितने लोग सहायता कार्यों के लिये निकलते थे उनमें से अनेक शाम को वापस नहीं आते थे। विवश होकर पंजाब छोड़कर डाक्टर साहब को जम्मू जाना पड़ा।

जम्मू में आकर डा. सूरज प्रकाश पाकिस्तान से आये विस्थापितों के पुनर्वास के काम में जुट गये। उन्होंने इस कार्य को जिस कुशलता से निभाया वह अपने में अनूठा था। वास्तव में यहां पर उन्होंने लोगों को संगठित करने, कम साधनों से काम चलाने एवं अथक परिश्रम करके लक्ष्य को प्राप्त करने का पाठ पढ़ा। यही अनुभव उनके उस भावी जीवन का आधार बना जब उन्होंने एक छोटी सी संस्था भारत विकास परिषद् की नींव रखी एवं उसे एक विशाल वट वृक्ष में बदल दिया। जम्मू में वे अपने कार्यों में इतने व्यस्त हो गये कि कभी–कभी कई महीनों तक उनके परिवार को भी यह पता नहीं होता था कि वे कहाँ हैं।

डॉ. साहब दिल्ली में

1948 में जम्मू का कार्य समाप्त करके डाक्टर साहब दिल्ली आ गये एवं अपना क्लिनिक प्रारम्भ कर दिया। प्रारम्भ में उन्होंने अपने एक सहपाठी डा. रोशन लाल बहल के साथ सदर थाना रोड पर कार्य प्रारम्भ किया किन्तु बाद में अपना स्वयं का क्लीनिक पहाड़ गंज में खोल लिया। वे स्वयं परिवार सहित निकट ही चूना मंडी में रहा करते थे।

1950 में 30 वर्ष की आयु में डाक्टर साहब का विवाह कु. अयोध्या गुप्ता से हुआ। वे जम्मू कश्मीर के एकाउन्टेन्ट जनरल श्री रामलाल गुप्ता की पुत्री थीं। वे एक विदुषी महिला थीं एवं संगीत तथा नृत्य में डबल एम.ए. थीं तथा आनेररी मजिस्ट्रेट भी थीं। इस दम्पति को 1951 में एक पुत्री उत्पन्न हुई एवं तत्पश्चात् एक पुत्र राकेश का जन्म 1954 में तथा 1960 एवं 1961 में दो पुत्रियों का जन्म हुआ। श्रीमती अयोध्या एक दृढ़ चरित्र वाली धैर्यवान महिला थीं। समाज सेवा को समर्पित डाक्टर सूरज प्रकाश के लिये जीवन पर्यन्त वे एक शक्तिशाली सम्बल बनी रहीं।

1958 में जब डाक्टर साहब की आयु 38 वर्ष की थी उनके पिता का निधन हो गया। अपने स्वयं के परिवार के अतिरिक्त अपनी माता, भाईयों एवं बहिनों की समस्त जिम्मेदारी भी उन्हीं के कंधों पर आ गई। उनके पिता जी के जीवनकाल में केवल एक बड़ी बहिन का ही विवाह हो सका था। अपनी संतान के साथ-साथ डाक्टर साहब ने अपने समस्त भाई-बहिनों का भरण-पोषण बखूबी किया, सबको योग्य बनाया एवं उनके विवाह आदि किये। उनके भाई-बहिन आज भी उनको स्नेहपूर्वक याद करते हैं एवं एक महान् भ्राता, महान व्यक्ति एवं भारत माता के महान सपूत के रूप में उनकी स्मृति संजोये हुए हैं।

सिटीजन्स काउन्सिल

अक्टूबर 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के लिये भारत बिल्कुल भी तैयार नहीं था। भारतीय सैनिकों के पास न तो पर्याप्त हथियार थे एवं न ही हिमालय पर्वत की ऊँचाइयों पर शीत ऋतु में पहिनने योग्य वस्त्र थे। चीनी सैनिक टिड्डी दल की तरह भारत की उत्तरी सीमाओं में घुस आये एवं भारतीय सेना को भारी क्षति पहुँची। भारतीय सैनिकों का उत्साह बढ़ाने एवं उनकी यथा संभव सहायता करने हेतु डाक्टर सूरज प्रकाश जी ने एक सिटीज़न्स काउन्सिल या 'जनमंच' की स्थापना की। सिटीजन्स कौंसिल ने जनता के बीच जाकर सीमा पर लड़ने वाले सैनिकों के लिये ऊनी वस्त्र, गर्म मोजे, स्वेटर, दवाइयां इत्यादि एकत्र की एवं सरकार को भेजनी प्रारम्भ कर दीं। जनमंच को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई एवं दिल्ली की जनता ने इसके कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

भारत विकास परिषद् की स्थापना

भारत विकास परिषद् की स्थापना सन् 1963 में हुई थी। यह वर्ष स्वामी विवेकानन्द का जन्म शताब्दी वर्ष भी था। कहा तो यही जाता है कि डा. सूरज प्रकाश जी ने 1962 में चीनी आक्रमण के समय भारतीय सैनिकों की सहायता करने हेतु जिस सिटीजन्स फोरम या जनमंच की स्थापना की थी उसी को 1963 में भारत विकास परिषद् में परिवर्तित कर दिया गया था। किन्तु परिषद् की स्थापना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। इसकी पृष्ठभूमि में एक गहन विचार मंथन एवं देश के संपन्न वर्ग की संकीर्ण होती दृष्टि से उत्पन्न वेदना थी। डा. साहब महसूस करते थे कि भारत का उच्च मध्यम वर्ग न केवल आत्म केन्द्रित एवं स्वार्थी होता जा रहा है अपितु समाज से अलग-थलग भी पड़ता जा रहा है। वह देश की समस्याओं के प्रति असंवेदनशील हो गया है एवं अपने हित चिंतन में ही डूबा रहता

है। इस संबंध में उनकी चर्चा अपने निकट मित्रों एवं सहयोगियों से होती रहती थी जिसमें उस समय के दिल्ली के अनेक प्रतिभाशाली एवं समाज सेवा में रुचि रखने वाले व्यक्ति सम्मिलित थे। इनमें सबसे प्रमुख ला. हंसराज गुप्ता, बसंत राव ओक, केदारनाथ साहनी तथा कुछ अन्य लोग शामिल थे।

डा. सूरज प्रकाश एक स्वप्नदर्शी तो थे ही किन्तु साथ ही इन स्वप्नों को व्यवहारिक रूप देने की सूझ-बूझ एवं क्षमता भी उनमें थी। इस सम्पन्न उच्च मध्यम वर्ग को संगठित करके एक मंच पर लाने की अपनी योजना को डाक्टर साहब ने अपने सहयोगियों के समक्ष रखा जिसे उन सबने सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार विधिवत् भारत विकास परिषद् की स्थापना हो गई। इसकी प्रथम बैठक कनाट प्लेस स्थित मैरिना होटल में आयोजित की गई जिसमें कुल 20 सदस्य उपस्थित थे। सोसायटीज एक्ट के अन्तर्गत परिषद् के पंजीयन हेतु प्रार्थना पत्र दिया गया एवं दिनांक 10-7-1963 को पंजीयन प्राप्त हुआ। परिषद् का प्रथम अध्यक्ष उच्चतम न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश जस्टिस बी.पी. सिन्हा को बनाया गया एवं स्वयं डा. सूरज प्रकाश राष्ट्रीय महामंत्री निर्वाचित हुए। स्वामी विवेकानन्द को परिषद् का पथ प्रदर्शक स्वीकार किया गया। इस समय परिषद् का कोई अपना कार्यालय नहीं था एवं वेस्ट पटेल नगर स्थित डाक्टर साहब का निवास स्थान ही कार्यालय के रूप में प्रयोग होता था। प्रारम्भ में केवल एक ही शाखा वेस्ट पटेल नगर में थी एवं वार्षिक सदस्यता शुल्क दस रुपये था। हर माह एक बैठक होती थी जिसमें किसी एक विद्वान वक्ता को बुलाया जाता था एवं किसी सामयिक समस्या पर भाषण एवं विचार विमर्श होता था। आमंत्रित वक्ताओं में अनेक लोग वामपंथी विचार धारा एवं अन्य प्रकार से विरोधी विचार वाले भी होते थे। वर्तमान विशाल भारत विकास परिषद् का यह प्रारंभिक लघु रूप था।

कार्य का आरम्भिक स्वरूप

प्रथम शाखा की स्थापना के पश्चात् डाक्टर साहब ने परिषद् के कार्यों का विस्तार करना प्रारम्भ किया। 1967 में राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता को प्रारम्भ किया गया। इस प्रतियोगिता के नियम उस समय के प्रसिद्ध संगीतकार अनिल विश्वास ने बनाये थे। इस प्रतियोगिता का पारितोषिक वितरण तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने किया था। 1969 में दिल्ली के बाहर देहरादून में परिषद् की दूसरी शाखा स्थापित हुई। डॉ. साहब काफी समय से इस प्रयत्न में थे कि परिषद् के विचारों को व्यक्त करने वाली एक पत्रिका निकाली जाय। अन्त में 1969 में ही **नीति** नाम की पत्रिका का

प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। प्रारम्भ में यह पत्रिका अर्धवार्षिक थी एवं केवल अंग्रेजी में ही निकलती थी। इसमें समाचार या फोटोग्राफ नहीं होते थे एवं केवल विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित होते थे। डॉ. सूरज प्रकाश स्वयं ही इसके प्रबन्ध संपादक थे। परिषद् के समस्त सदस्यों को यह पत्रिका निशुल्क भेजी जाती थी।

1972 में डाक्टर साहब ने एक बहुत महत्वाकांक्षी योजना हाथ में ली एवं वह थी छत्रपति शिवाजी की मूर्ति की स्थापना। 1973 की ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी को हिन्दूपाद पाद शाही के 300 वर्ष पूरे होने वाले थे एवं इसी तिथि को इस मूर्ति को स्थापित करने का निश्चय किया गया। नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली जहां मिलती हैं एवं मिन्टो रोड तथा थामसन रोड का चौराहा है वहीं स्थित पार्क को इस कार्य के लिए चुना गया। तीस फीट ऊंचे विशाल मंच पर घोड़े पर सवार महाराज शिवाजी की 18 फुट ऊंची मूर्ति का निर्माण कराया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति वी.वी. गिरि ने निश्चित तिथि पर अनेक मंत्रियों, जिनमें महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री एवं तत्कालीन वित्त मंत्री यशवंत राव चौहान भी शामिल थे, संसद सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में इस मूर्ति का अनावरण किया। इसी दिन से मिन्टो ब्रिज का नाम शिवाजी ब्रिज एवं रेलवे स्टेशन का नाम शिवाजी रेलवे स्टेशन कर दिया गया।

डॉ. सूरज प्रकाश अदम्य ऊर्जा के स्वामी थे एवं उनकी ऊर्जा तीन भागों में विभाजित हो जाती थी। सर्वप्रथम उनका परिवार था जो काफी बड़ा था एवं जिसमें अन्य परिवारों की भांति ही बच्चों की पढ़ाई, उनका रोजगार, विवाह एवं सदस्यों की बीमारी इत्यादि से जूझना पड़ता था। डॉक्टर साहब एक कुशल, लोकप्रिय एवं व्यस्त चिकित्सक भी थे। यही मेडिकल प्रैक्टिस उनकी जीविका का साधन थी। उनके रोगियों की सूची में दिल्ली की अनेक प्रख्यात हस्तियां शामिल थीं किन्तु अपने परिचितों एवं मित्रों से वे कोई शुल्क नहीं लेते थे। निर्धन रोगी की ओर भी वे उतना ही ध्यान देते थे जितना किसी धनवान की ओर। उन्होंने एक पैथोलोजिकल लेबोरेटरी भी बनवाई थी जिसमें बहुत कम शुल्क लेकर मेडिकल टैस्ट किये जाते थे। उनके एक मित्र डॉ. एन. के. खोसला ने विवेकानन्द मेडिकल मिशन के नाम से एक संस्था बनाई थी जिसमें नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा, आपरेशन तथा अन्य प्रकार की चिकित्सा की जाती थी। डॉ. साहब इस संस्था के संरक्षक थे। वे एक मूक एवं बधिर विद्यालय के अध्यक्ष भी थे।

1990 में विकलांग सहायता के क्षेत्र में एक और कदम उठाया गया एवं दिलशाद गार्डन दिल्ली में विकलांग सहायता केन्द्र की स्थापना की गई। इस केन्द्र में विकलागों

को कृत्रिम अंग नि:शुल्क दिये जाते थे। यह केन्द्र अब अत्यन्त विशाल रूप में चल रहा है। अब इन केन्द्रों की संख्या बढ़कर तेरह हो गई है।

परिषद् का कार्य विस्तार

1963 के पश्चात् डॉक्टर साहब की सबसे अधिक ऊर्जा भारत विकास परिषद् के विस्तार एवं उसमें नये कार्यक्रमों को जोड़ने पर खर्च हो रही थी। पूरे भारत में शाखा विस्तार के लिए वे निरंतर प्रयास करते थे। 1978 में दिल्ली में परिषद् का पहला अखिल भारतीय अधिवेशन आयोजित किया गया। 1979 में पंजाब तथा हरियाणा में शाखाएं प्रारम्भ हुई। एक राष्ट्रीय शासी मंडल का गठन किया गया जिसका प्रथम अधिवेशन 1983 में दिल्ली में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में कुल 31 प्रतिनिधि दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, बिहार, उ.प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उड़ीसा इत्यादि से आये थे। इससे स्पष्ट है कि परिषद् की शाखाओं का विस्तार सम्पूर्ण भारतवर्ष में हो रहा था। यह सब डॉक्टर सूरज प्रकाश के कठोर परिश्रम का ही फल था।

इस कठोर मानसिक एवं शारीरिक परिश्रम का दुष्प्रभाव डॉक्टर साहब के स्वास्थ्य पर पड़ना प्रारम्भ हो गया था। 1971 में अर्थात् 51 वर्ष की आयु में उन्हें गुर्दे की पथरी का आपरेशन कराना पड़ा। 55 वर्ष की आयु में उन्हें प्रथम बार दिल का दौरा पड़ा। परिवार की दुश्चिन्ताएं एवं वेदनाएं भी उनके हिस्से में काफी आईं थीं। सन् 80 में उन्होंने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का विवाह किया एवं उसके दो माह पश्चात् ही उनकी पत्नी का निधन हो गया। यह एक भयंकर आघात था एवं इसी के परिणाण स्वरूप उन्हें दूसरी बार दिल का दौरा पड़ा एवं वे दो महीने तक रुग्ण शय्या पर पड़े रहे। सन् 1985 में उनकी सबसे बड़ी पुत्री जिसका विवाह 1980 में हुआ था की मृत्यु हो गई। उस समय इस पुत्री की आयु केवल 34 वर्ष थी। 1988 में उन्होंने अपनी सबसे छोटी पुत्री का विवाह करके अपनी अंतिम पारिवारिक जिम्मेदारी से मुक्ति पाई। जनवरी 1991 में उनकी माता जी का देहान्त हुआ।

1991 तक परिषद् की शाखाओं का विस्तार दक्षिण भारत सहित लगभग सम्पूर्ण देश में हो चुका था। ऐसा अनुमान है कि इस वर्ष तक लगभग 135 शाखाएं स्थापित हो चुकी थी। इस शाखा विस्तार एंव अन्य बैठकों एवं सम्मेलनों में भाग लेने के लिए डाक्टर साहब निरन्तर यात्राएं करते थे। प्राय: ही उनका प्रत्येक शनिवार एवं रविवार इसी कार्य हेतु रिजर्व रहता था। 6 फरवरी 1991 को उदयपुर में परिषद् का अखिल भारतीय अधिवेशन होना निश्चित हुआ था एवं डॉक्टर साहब इसी की तैयारी में व्यस्त

थे। इस अधिवेशन के चार दिन पूर्व उन्हें गंभीर हृदयाघात हुआ एवं जो उनके लिये अंतिम आघात साबित हुआ। उनकी मृत्यु हो गई। इससे पूर्व अपने सहयोगियों एवं परिवारजनों के ज़ोर देने पर वे उदयपुर अधिवेशन के पश्चात् हृदय रोग से संबंधित शल्य चिकित्सा कराने को राज़ी हो गये थे किन्तु भाग्य का विधान कुछ और ही था एवं इसकी नौबत ही नहीं आ पाई। उनकी मृत्यु के साथ ही भारत विकास परिषद् के इतिहास का एक अध्याय समाप्त हो गया।

डॉक्टर साहब की कार्य निष्ठा

डॉक्टर साहब के प्राण मानों भारत विकास परिषद् में ही बसते थे। उन्होंने 21 जनवरी 1991 को पटना में प्रान्तीय स्तर के सम्मेलन को सम्बोधित किया था। मृत्यु के दो दिन पूर्व उन्होंने मेरठ निवासी श्री एस.पी. जैन जो सेवा निवृत्त आई.ए.एस. हैं एवं नीति के सम्पादन सहित अनेक प्रकार से परिषद् की सेवा कर चुके हैं के साथ कई घंटे तक परिषद् की भावी योजनाओं पर विचार-विमर्श किया था। ऐसा लगता था कि अभी वे बीस वर्ष और जीवित रहेंगे।

अपने बिगड़ते हुए स्वास्थ्य के बावजूद भी वे देश के दूरस्थ प्रान्तों में फैली हुई शाखाओं में निरंतर प्रवास करते थे। निर्धारित कार्यक्रमों में पहुंचने का उनका निश्चय कितना दृढ़ था, यह एक घटना से स्पष्ट हो जाता है। उन्हें अम्बाला में एक कार्यक्रम में सम्मिलित होना था किन्तु कुछ व्यस्तताओं के चलते वे अपने अन्य सहयोगियों के साथ नहीं जा सके। अगले दिन प्रात:काल की ट्रेन पकड़ने के लिए जब वे स्टेशन पहुंचे तो ट्रेन में बहुत भीड़ थी। किसी प्रकार एक अनारक्षित डिब्बे में खड़े होकर सफर करते हुए डॉक्टर साहब अम्बाला पहुंचे एंव मुस्कराते हुए कार्यक्रम में भाग लिया। वे चाहते तो यात्रा रद्द कर सकते थे किन्तु हृदय रोग एवं खराब स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने ऐसा नहीं किया।

इतना व्यस्त रहने के बावजूद डॉक्टर साहब भारत एवं विदेशों में भी यात्रा करने का समय निकाल लेते थे। परिषद् के कार्य से वे वर्ष में दो बार सम्पूर्ण भारत की यात्रा करते थे। 1968 एवं 1981 में उन्होंने मास्को, लन्दन, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका की यात्राएं कीं। 1984 में वे राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के साथ वे मारीशस भी गये थे।

चुम्बकीय व्यक्तित्व

डॉक्टर साहब में नेतृत्व की जन्मजात प्रतिभा थी। चुम्बकीय व्यक्तित्व एवं लक्ष्य के प्रति समर्पण ये एक नेता के सबसे बड़े गुण होते हैं। डॉक्टर साहब साधारण

कार्यकर्त्ता से लेकर विद्वानों, राष्ट्रपतियों, उद्योगपतियों, राजनीतिज्ञों जिससे भी मिलते वह उनसे प्रभावित होता था एवं उनका अपना बन जाता था। राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन, वी.वी. गिरि एवं ज्ञानी जैल सिंह भारत विकास परिषद् के कार्यक्रमों में उपस्थित हुए। ला. हंसराज गुप्ता, लक्ष्मी मल सिंघवी, न्यायमूर्ति बी.पी. सिन्हा, वी.एम. त्रेहान, श्री जगमोहन जैसे व्यक्तियों को उन्होंने परिषद् से जोड़ा। देश के हर कोने का कार्यकर्त्ता उनसे बातचीत करने को उत्सुक रहता था एवं उन्हें अपना समझता था।

परिषद् के इस उच्च एवं विशाल भवन का निर्माण उन्होंने एक-एक ईंट रख कर अपने हाथों से किया था। एक शाखा से प्रारम्भ करके 28 वर्षों में शाखाओं की संख्या 135 से अधिक हो गई थी एवं सदस्यों की संख्या चार हजार के लगभग हो चुकी थी। ऐसा नहीं कि उन्हें अपने प्रयासों में सदैव सफलता ही मिली हो। अनेक बार वे शाखाओं एवं प्रान्तों के निमंत्रण पर कार्यक्रमों में पहुंचते थे किन्तु सदस्यों की उपस्थित नगण्य होती थी। किन्तु ऐसे अवसरों पर भी उन्होंने न तो कभी धैर्य खोया एवं न ही हताश हुए। वे सदैव अपने कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाते थे एवं हिम्मत से कार्य करते रहने की प्रेरणा देते थे।

डॉक्टर साहब अपने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देने वाली भाषण कला के स्वामी तो नहीं थे किन्तु अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करना वे भली-भांति जानते थे। जनसमूह के समक्ष एवं व्यक्तिगत बात-चीत में भी वे अपने विचारों को सुन्दर अभिव्यक्ति दे सकते थे। यही गुण उनकी लेखन शैली में भी था। नीति में समय-समय पर वे सटीक लेख लिखते रहते थे एवं अपने विचारों को प्रभावी ढंग से लोगों के समक्ष रख सकने में समर्थ थे।

उन्होंने अपने जीवन काल में एक ऐसी संस्था को जन्म दिया एवं उसका विकास किया जो आज भी उन्हीं के आदर्शों को सामने रखकर निरंतर प्रगति कर रही है।

डॉ. सूरज प्रकाश समय-समय पर नीति के विभिन्न अंकों में भारत विकास परिषद् के प्रकल्पों, आदर्शों एवं मूल्यों के विषय में छोटे बड़े लेख लिखते रहते थे। ये समस्त लेख मूल रूप से अंग्रेजी भाषा में लिखे गये थे। उनमें से कुछ लेखों का संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जा रहा है। इन लेखों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न बिन्दुओं और समस्याओं पर उनके विचार क्या थे। ये विचार आज भी समीचीन हैं।

डॉ. साहब के लेखन से चयनित

आडम्बर रहित सेवा

प्रचार से अधिक सेवा यह भारत विकास परिषद् का आदर्श है। कभी–कभी प्रचार आवश्यक होता है किन्तु कहीं परिषद् के प्रचार की आड़ में स्वयं का प्रचार तो नहीं हो रहा है इसका ध्यान रखना आवश्यक है। परिषद् का मार्ग अत्यंत कठिन है। समाज की मानसिकता को बदलने, उसमें प्राचीन संस्कारों को पुनर्जीवित करने एवं भारत के प्राचीन मूल्यों में उसकी आस्था जागृत करने हेतु हमें अपने में आत्मानुशासन, आत्म नियंत्रण, त्याग एवं मिशनरी भावना को स्थान देना होगा। हमें संकीर्ण मानसिकता से ऊपर उठकर अपनी मातृभूमि की एकता एवं अखंडता के लिए काम करना होगा। अपने आदर्शों, उद्देश्यों एवं मिशन को लगातार ध्यान रखने पर ही हमें अपने प्रयत्नों में सफलता मिल सकेगी।

यदि हम सस्ते प्रचार की ओर जायेंगे तो भारत विकास परिषद् एवं रोटरी तथा लायन्स क्लब में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा एवं हम उनकी कार्बन कापी बन कर रह जायेंगे। सच्ची सेवा के अवसर मिलने के कारण ही इन क्लबों के सदस्य परिषद् की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। हमें ध्यान रखना होगा कि वे निराश न हों। परिषद् को कभी भी एक साधारण क्लब के स्तर पर नहीं उतरना चाहिए।

(नीतिः जुलाई 1989)

महिला सहभागिता

भारतीय समाज में महिलाओं का स्थान एवं देश के विकास में उनकी भूमिका पर बहुत कुछ लिखा गया है एवं अनेक मंचों से बहुत कुछ कहा जाता रहा है। इस समस्त लेखन एवं कथन का उद्देश्य यही है कि सामाजिक परिवर्तन लाने, चेतना, जाग्रत करने एवं रुढ़िवादी बंधनों को तोड़ने में महिलाओं की भूमिका का महत्व समझा जा सके। महिलाओं को भारत विकास परिषद् के आदर्शों, उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्ध होकर समाज में परिवर्तन लाना होगा।

इसी उद्देश्य से परिषद् की सदस्यता पति एवं पत्नी दोनों को ही दी जाती है ताकि पत्नी अपने पति के साथ समान रूप से परिषद् की गतिविधियों में भाग ले सके। अन्य समितियों के साथ एक महिला समिति भी इसी उद्देश्य से बनाई जाती है किन्तु

महिलाओं का एक समानान्तर संगठन खड़ा करने की परिषद् में बिल्कुल मनाही है। एक ऐसा अलग महिला संगठन का जिसमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष इत्यादि हों का परिषद् में कोई स्थान नहीं है। निश्चय रूप से प्रत्येक शाखा में एक महिला संयोजिका होनी चाहिए जो कि शाखा के साथ मिलकर कार्यकारिणी समिति की देखरेख में कार्य करेगी। कार्यकारिणी में भी अधिक से अधिक महिलाओं को लिया जाना चाहिए एवं उनके अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष जैसे पदों पर चुने जाने को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

(नीति : नवम्बर 1989)

सादा जीवन उच्च विचार

हमें सावधानी पूर्वक ऐसे कार्यक्रमों से बचना चाहिए जिनमें अत्याधिक श्रम, समय एवं धन लगता है किन्तु जिनसे परिषद् के उद्देश्यों की तनिक भी पूर्ति नहीं होती। ऐसे कार्यक्रमों से मेरा तात्पर्य उन कार्यक्रमों से है जो मेल-जोल, खान-पान एवं मनोरंजन से आरम्भ होकर वहीं पर समाप्त हो जाते हैं एवं जिन्हें सांस्कृतिक कार्यक्रमों का नाम दे दिया जाता है। ऐसे कार्यक्रमों से हम सस्ती एवं पतनोन्मुखी पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा देते हैं एवं हमारी अपनी संस्कृति पिछड़ जाती है। भारतीय पृष्ठभूमि वाले कुछ नृत्य एवं संगीत में कोई बुराई नहीं है। खान-पान एवं मनोरंजन पर व्यय न्यूनतम होना चाहिए। हमारे कार्यक्रम सादे किन्तु सुन्दर होने चाहिए एवं यह सुन्दरता बिना तड़क-भड़क एवं कम खर्च में भी प्राप्त की जा सकती है। दिखावा, तड़क-भड़क, अत्यधिक प्रचार एवं व्यक्तिवाद के स्थान पर कुशल एवं शान्तिपूर्वक कार्य करने वाले संगठन तथा शालीनता को बढ़ावा मिलना चाहिए। परिषद् का आदर्श सादा जीवन उच्च विचार है। व्यय पर नियंत्रण, परिश्रम पूर्वक धन संग्रह, आर्थिक अनुशासन एवं बचत के द्वारा शाखाएं आर्थिक संकटों से बच सकती हैं। इस मामले में प्रांतीय अध्यक्ष एवं महासचिवों को सतर्कता पूर्वक शाखाओं पर नजर रखनी चाहिए ताकि वे प्रान्तों तथा केन्द्र के प्रति अपने आर्थिक दायित्वों को पूरा कर सकें एवं उन पर आर्थिक देनदारियां न बन जायें।

(नीति : दिसम्बर 1989)

अनुशासन

अनुशासन किसी भी संस्था की आधार शिला होती है। परिषद् तभी आगे बढ़ेगी जब अनुशासन, स्वार्थ रहित सेवा एवं त्याग इसके दृढ़ सिद्धान्त होंगे। स्वार्थ रहित

सेवा एवं त्याग करने का जो व्यक्ति दावा करता है उसे अनुशासन में रहना होगा एवं अपने अहं के ऊपर उस संगठन को स्थान देना होगा जिसके माध्यम से उसने देश एवं देशवासियों की सेवा का व्रत लिया है। यदि कोई इस गलतफहमी में है कि वह संगठन के ऊपर हैं एवं उसे कहीं से कोई निर्देश प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं हैं तो ऐसा व्यक्ति संगठन में रहने योग्य नहीं है। वह चाहे कितना भी निष्ठावान एवं कार्यकुशल हो उससे संगठन को हानि ही होगी। परिषद् का सांगठनिक ढांचा तीन स्तरीय है एवं प्रान्तीय कार्यकारिणी को शाखाओं को निर्देश देने, उनकी देखभाल करने एवं मानीटरिंग करने का पूर्ण अधिकार है। इस मामले में शाखाएं प्रान्तों के निर्देशों पर प्रश्न नहीं उठा सकतीं। प्रान्त के निर्देशों की अवहेलना एवं अनुशासनहीनता को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

(नीति : अप्रैल 1990)

समयबद्धता का अभाव

भारत विकास परिषद् समय बद्धता को बहुत महत्व देती है क्योंकि समय बद्धता हमारी स्वाभाविक संस्कृति, आत्मानुशासन एवं जिम्मेदारी के अहसास का प्रतीक है। जो लोग भी अपने को प्रबुद्ध कहलाना चाहते हैं उनकी प्रामाणिकता का यह प्रतीक चिन्ह है। भारत विकास परिषद् सर्वाधिक प्रबुद्ध लोगों की एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था है अत: इसके सदस्यों को न केवल संगठन के कार्यक्रमों में अपितु निजी जीवन में भी समयबद्धता का पालन करना चाहिए। यह देखकर अत्यंत निराशा एवं वेदना होती है कि देश के लगभग सभी भागों में एवं लगभग सभी अवसरों पर समय का पालन नहीं होता एवं इससे यह स्पष्ट होता है कि लम्बे समय तक इस संस्था जुड़े रहने के बावजूद अधिकतर सदस्यों ने इस गुण को आत्मसात नहीं किया है एवं इसे अपनी आदत नहीं बनाया है। हम दूसरों से समय पालन की अपेक्षा करते हैं किन्तु स्वयं समय पर नहीं पहुंचते। यह लज्जा जनक है कि कभी–कभी सचिव या संयोजक भी कार्यक्रम स्थल पर समय पर नहीं उपस्थित होते। ऐसे अवसरों पर मुख्य अतिथि एवं अतिथियों की उपस्थिति में ही जल्दी–जल्दी मंच तैयार किया जाता है एवं अन्य तैयारियां की जाती हैं एवं इस प्रकार उनका समय खराब होता है। ऐसी घटनाओं से परिषद् की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है एवं भविष्य में जुड़ने वाले सदस्य अपना इरादा बदल देते है। अत: समस्त सदस्यों एवं विशेष रूप से कार्यकारिणी के सदस्यों का कर्तव्य है कि वे परिषद् के कार्यक्रमों में समय का पालन करें। अधिकारीगण एवं अन्य वे लोग जिन

पर कार्यक्रम आयोजित करने का उत्तरदायित्व है का कर्तव्य है कि वे कार्यक्रम स्थल पर निर्धारित समय के पूर्व पहुंच जायें एवं अतिथियों के आने के पूर्व समस्त तैयारियों पूरी कर लें।

(नीतिः अगस्त 1990)

सर्वांगीण विकास

भारत विकास परिषद् देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यहाँ विकास का अर्थ बहुत विस्तृत है एवं इसमें प्रगति एवं समृद्धि भी शामिल है एवं ये दोनों शान्ति से जुड़ी हुई हैं। अस्थिरता शान्ति की शत्रु है। यदि देश में अशान्ति है एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त है तो प्रगति असंभव है। इस लिये भारत विकास परिषद् शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने की हामी है एवं चाहती है कि जन सेवाएं, व्यापार, उद्योग, कृषि, न्यायालय, विद्यालय इत्यादि ठीक प्रकार कार्य करते रहें। परिषद् किसी ऐसे आन्दोलन का समर्थन नहीं कर सकता जिससे सामान्य जीवन में व्यवधान उत्पन्न हो क्योंकि इससे विकास रुक जाता है। इसीलिये हम आतंकवाद एवं हिंसा का विरोध करते हैं क्योंकि इनसे देश कमजोर होता है। हमारी फौजें सीमाओं पर देश की सुरक्षा में लगी रहती हैं एवं यदि उन्हें घरेलु हिंसक या शान्तिपूर्ण आन्दोलनों को दबाने में इस्तेमाल किया जाता है वो देश खतरे में पड़ जाता है। ऐसे समय में जब कि देश बाहरी आक्रमण, आंतरिक आन्दोलन एवं देश के टुकड़े करने के षडयंत्रों का सामना कर रहा हो हमारा ध्यान देश की एकता एवं अखंडता की ओर लगा होना चाहिए। प्रत्येक देशभक्त भारतवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह साधारण विवादों में हिंसात्मक आन्दोलनों से बचे क्योंकि ऐसे मामलों का समाधान समय बीतने के साथ स्वयमेव हो जाता है।

(नीतिः नवम्बर 1990)

भारत विकास परिषद् एक अराजनैतिक संस्था है

भारत विकास परिषद् का कोई राजनैतिक उद्देश्य या महत्वाकांक्षा नहीं है। इसका किसी राजनैतिक या अन्य प्रकार की संस्था से कोई संबंध भी नहीं है। परिषद् के सदस्य व्यक्तिगत रूप से अपना कोई भी राजनैतिक दृष्टिकोण या विचार रखने को स्वतंत्र है किन्तु ये विचार परिषद् के आदर्शों के विरोधी नहीं होने चाहिए। परिषद् के किसी सदस्य को चाहे वह कितना भी उच्च पद पर आसीन हो। परिषद् को किसी राजनैतिक गतिविधि में शामिल करने या किसी राजनैतिक दल या व्यक्ति के राजनैतिक

हित साधन के लिए इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। राजनैतिक शक्ति का आकर्षण बहुत बड़ा होता है और परिषद् के कुछ सक्रिय एवं गतिवान सदस्य इसके मकड़जाल में फंस जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों की उपयोगिता परिषद् के लिए न केवल कम हो जाती है अपितु ऐसे लोग संगठन के लिए एक बोझ बन जाते हैं क्योंकि संगठन के हेतु कुछ काम करने के स्थान पर ये लोग इसका उपयोग अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु करने लगते हैं। इसलिये भारत विकास परिषद् न केवल सख्ती के साथ अपने को राजनीति से दूर रखती है अपितु राजनीति में सक्रिय व्यक्तियों को अपने यहां महत्वपूर्ण पद देने से भी परहेज करती है।

भारत विकास परिषद् एंव दूसरे सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन

(भारत विकास परिषद् क्लब नहीं है)

भारत विकास परिषद् नागरिकों के प्रबुद्ध वर्ग का एक गैर राजनैतिक, सामाजिक सांस्कृतिक एवं सेवा हेतु बनाया गया संगठन है। रोटरी क्लब एवं लायन्स क्लब की भांति प्रबुद्ध नागरिकों के कुछ अन्य संगठन भी कार्यरत हैं। रोटरी क्लब का एक सदस्य लायन्स क्लब का सदस्य नहीं हो सकता एवं लायन्स का सदस्य भी रोटरी में नहीं जा सकता किन्तु भारत विकास परिषद् की सदस्यता के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है क्योंकि परिषद् मौलिक रूप से इन क्लबों से भिन्न है।

भारत विकास परिषद् क्लब नहीं है। यह चुने हुए समृद्ध एवं प्रबुद्ध लोगों की ऐसी एक समिति है जिन्होंने निर्धनों, बेसहारा एवं निराधार लोगों की सेवा के लिये अपने को अर्पित कर दिया है। ये प्रबुद्ध लोग उन निर्धनों में उत्तरदायित्व की भावना एवं आत्म विश्वास जागृत करना चाहते हैं एवं वास्तव में सच्ची सेवा का मर्म भी यही है।

रोटरी एवं अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का जन्म भारत के बाहर हुआ है एवं वे ऐसे स्रोतों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं जो भारत के लिये अपरिचित एवं प्रतिकूल हैं। उन पर विदेशी संस्कृति की गहरी छाप लग जाती है जो उनके विचारों एवं गतिविधियों को भी प्रभावित करती है। इन संगठनों का वास्तविक नियंत्रण भारत के बाहर निवास करने वाले कुछ व्यक्तियों के हाथों में रहता है। इन संगठनों द्वारा भारत में इकट्ठे किये गये धन का अधिकांश भाग विदेशों को चला जाता है एवं विदेशियों की इच्छानुसार ही उसे खर्च किया जाता है। इस धन का एक बहुत छोटा भाग इस देश के निवासियों के हित में व्यय करने के लिये उपलब्ध हो पाता है। बाहरी तौर पर इन क्लबों ने स्थानीय

एवं राष्ट्रीय आयाम अपना लिया है। वे स्थानीय भाषा का प्रयोग करते हैं एवं राष्ट्रगान भी गाते हैं किन्तु पश्चिमी संस्कृति की तुलना में एक हीन भावना एवं पश्चिम की तड़क–भड़क वाली दुनिया के प्रति एक दासत्व का भाव इनमें स्पष्ट देखा जा सकता है। इसके विपरीत भारत विकास परिषद् पूर्ण रूप से एक स्वदेशी से संगठन है एवं इसका दृष्टिकोण भी पूर्ण रूपेण राष्ट्रीय है। इसकी कल्पना भी भारत में ही की गई एवं इसका जन्म भी यहीं हुआ है। यह उस भारतीय संस्कृति एवं उन भारतीय मूल्यों से ही प्रेरणा प्राप्त करता है जिनकी रक्षा एवं उत्कर्ष के लिये इसकी स्थापना की गई है।

क्लब तथा परिषद् के मध्य मुख्य अन्तर हमारे आदर्शों, दर्शन, उद्देश्यों गतिविधियों एवं सोचने के तरीके में है।

क्लबों का मुख्य उद्देश्य सामाजिक रूप से मिलना जुलना एवं खान–पान तथा मनोरंजन है अत: स्वाभाविक रूप से ये इसके आवश्यक अंश हैं। परिषद् भी सामाजिक मेल जोल के महत्व को स्वीकार करती है जिसके बिना संपर्क एवं सहयोग संभव नहीं है। किन्तु परिषद् में मेलजोल किसी उद्देश्य पूर्ति का एक साधन है वह स्वयं में उद्देश्य नहीं है। इसलिये मिलने–जुलने पर उतना ही जोर दिया जाना चाहिए जितना संपर्क एवं सहयोग के लिये आवश्यक हो।

समाज सेवा क्लबों एवं परिषद् दोनों का ही लक्ष्य है किन्तु दोनों में समाज सेवा की परिभाषा भिन्न है। भारत विकास परिषद् के लिये सेवा का अर्थ देश का समग्र विकास, राष्ट्रीय संस्कृति एवं परम्पराओं की सुरक्षा, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पुनर्रुत्थान तथा इन्हीं मूल्यों के आधार पर देश का पुनर्निमाण है। अत: परिषद् को ऐसे कार्यक्रम हाथ में लेने चाहिए जिनका देश तथा समाज पर गहरा प्रभाव पड़े। इन कार्यक्रमों की सफलता के लिये लोगों की मानसिकता बदलने की आवश्यकता है।

इसकी तुलना में क्लबों द्वारा की जा रही सेवा एक सतही कार्यक्रम है जिसका समाज पर कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ता। इस सतही सेवा से इन लोगों को आत्म तुष्टि मिलती है जो अपनी अकूत संपदा का छोटा सा अंश समाज सेवा के नाम पर खर्च करते हैं एवं प्राय: ही उनका उद्देश्य अपना स्वयं का प्रचार एवं अपने हितों को बढ़ावा देना होता है। खर्च किये धन का एक बहुत छोटा अंश ही उन निर्धन लोगों तक पहुंच पाता है जिनके लिये उसे खर्च किया गया है। वास्तव में इन क्लबों में काम कम एवं प्रचार अधिक होता है।

हमारा एकमात्र उद्देश्य – विकास

भारत विकास परिषद् की समस्त गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य देश के विकास की गति में तेजी लाना है। अन्य समस्त उद्देश्य गौण हैं एवं हमें अपनी समस्त ऊर्जा का उपयोग इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये करना चाहिए। हमें देश के पिछड़ेपन के कारणों का विश्लेषण करना चाहिए एवं अपनी आर्थिक क्षमता एवं मानवशक्ति के अनुसार उनका निराकरण करना चाहिए। इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि हमारे साधन सीमित हैं एवं उनको ऐसे कार्यक्रमों पर व्यर्थ नहीं किया जाना चाहिए जिनका विकास से कोई संबंध नहीं है।

मुझ से अनेक बार यह कहा गया है कि मैं समय–समय पर दिशानिर्देश जारी करूं एवं ऐसे कार्यक्रमों का सुझाव दूँ जिनके पालन करने से हमारे इस उद्देश्य की पूर्ति हो सके। मेरे विचार में वृक्षारोपण एक ऐसा कार्यक्रम है जो देश के विकास में बहुमूल्य योगदान कर सकता है। वृक्ष हमारे पर्यावरण का संतुलन बनाये रखते हैं, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं एवं समय पर वर्षा होने में योगदान करते हैं। सबसे अधिक इनसे हमें लकड़ी तथा ऊर्जा प्राप्त होती है जो हमारी अर्थव्यवस्था की प्रगति में सहायक है। स्वतंत्रता दिवस के आस–पास वृक्षारोपण का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर क्रियान्वित किया जा सकता है।

इसी प्रकार कुछ अन्य कार्यक्रम जो भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रदूषण नियंत्रण इत्यादि से संबंधित हैं को हाथ में लिया जा सकता है। इनका देश के विकास से सीधा संबंध है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि भूखे पेट व्यक्ति से ईश्वर की बात करना व्यर्थ है। अत: ऐसे व्यक्ति से जो जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहा हो आदर्शों एवं मूल्यों की बात करने का क्या लाभ।

अत: अब समय आ गया है भारत विकास परिषद् अपने नाम को सार्थक करे एवं देश के विकास की राह पर चले।

भारत विकास परिषद् से सम्बन्धित प्रत्येक जानकारी हेतु परिषद् की वेबसाइट - www.bvpindi.com को देखें।

Parishad's Progress during the Life Time of Dr. Suraj Prakash

1963 **12 January:** Citizens Council set up by Dr. Suraj Parkash initially to mobilize citizens' effort is to fight the Chinese attack was renamed as the Bharat Vikas Parishad (BVP) on the birth centenary of Swami Vivekanand and thus BVP was born.

10th July: BVP is registered as a Society under The Societies Registration Act 1860. The first meeting is also held on this date.

1967 First Group Song Competition is held and President Zakir Hussein distributes the prizes to the winners.

1968 First branch outside Delhi is set up at Dehradun in Uttar Pradesh.

1969 BVP decides to publish NITI and Dr. Suraj Parkash becomes its first Managing Editor.

1972 BVP decides to install 18.5 feet high equestrian statue of Chhatrapati Shivaji Maharaj on a 30 feet high platform at New Delhi. Babu Jagjeevan Ram, Defence Minister, lays the foundation stone of the statute.

1973 President Shri V.V. Giri unveils the statue in the Tercentenary year of Shivaji's Rajya Abhishek.

1974 Dr. LM Singhivi, who joined BVP in 1969, takes over as President of BVP from Lala Hans Raj Gupta. He propounds the four Sutras of BVP – Sampark, Sahyog, Samskar and Sewa.

1983 **14 August:** First meeting of the National Governing Board is held. Thirty-one members attend it from 9 States.

1985 Justice Hans Raj Khanna takes over as President of BVP from Dr. LM Singhvi.

1986 BVP decides to conduct training camps for its office bearers in every state every year.
BVP spreads its wings in the south as its branches are opened at Vishakhpatnam, Vijayavara and Hyderabad on 15th, 16th and 17th August respectively.

1988 BVP decides to publish NITI on monthly basis.
BVP completes 25 years of its existence, and a function to celebrate Silver Jubilee is held at Delhi. The number of branches touches 100 mark. BVP's activities extend to most of the states.
Three new projects are introduced in BVP
● Viklang Sahayata. ● Vanvasi Kalyan. ● Vikas Saptah.

1990 First Viklang Sahayata Kendra is established in Delhi

1991 Shri Piara Lal Rahi takes over as Secretary General at the All India Conference held at Udaipur, after the demise of the founder Secretary General Dr. Suraj Prakashji on 2nd February.

भारत विकास परिषद्
BHARAT VIKAS PARISHAD

भारत विकास परिषद्

भारत विकास भवन, बी.डी. ब्लाक, पावर हाउस के पीछे, पीतमपुरा, दिल्ली-110034
फोन: 011-27313051, 27316049 फैक्स : 011-27314515
ई-मेल : bvp@bvpindia.com. वेब साइट : www.bvpindia.com